

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Sanskrit) Com. 100

By Revashan Kumar

1) एक सच्ची नीतिकार के रूप में रहीम
 का महत्वांकन करें।
 एक हिन्दी साहित्य जगत में यों तो
 अनेक नीतिकार कवि हुए, किन्तु उन
 कवियों में जितनी प्रसिद्धि रहीम को
 मिली, उतनी प्रसिद्धि अन्य किसी को
 नहीं। अकबर के सेनापति होने के
 कारण वे बड़ाबर युद्ध में जाते रहे।
 रात-दिन लड़ाई में समय बिताने वाले
 व्यक्ति के दिल में साहित्य और संगीत
 के कोमल भाव कैसे उत्पन्न
 हुए, यह आश्चर्य की बात है।
 रहीम की विशेष प्रसिद्धि उनके
 नीति-विषयक दोहे के लिए है। वे
 उसी तरह शताब्दियों से हिंदी भाषियों के
 जवान पर रहते चले आये हैं जिस
 तरह गौस्वामी तुलसीदास के दोहे
 और चौपाइयों की पंक्तियों। इस लाले
 प्रियता का कारण महत्वपूर्ण है। यह
 यह है कि उपदेश देने के लक्ष्य की
 सिद्धि के लिए वृंद, गिरदार आदि
 अन्य नीति विषयक काव्य के स्व-
 यिनाओं की तरह रहीम चर्मशास्त्री
 या शिक्षक की शैली न अपनाकर
 कवि के साधनों का ही उपयोग
 करते हैं। रहीम ने विविधतापूर्ण
 और उत्थान-पतन के जीवन से जो
 प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किये थे उन्हें
 ही वे प्रसादगुण पूर्ण तथा सहज
 सविद्य अभिव्यक्ति प्रदान करते थे

और इस प्रकार पाठक या श्रोता की
बुद्धि को प्रभावित करने के साथ
ही वे इसकी भावना का भी
स्पर्श करते थे।

अपने क्षेत्र में रहीम के दोहों
भी नावक के लीरों हैं, जिस प्रकार
बिहारी की यही विशेषता है कि
वे संस्कृत और हिन्दी के आलंकारिक
कवियों के लम्बे-चोटे दूहों में
व्यक्त भावों को दोहों की बोली
परिधि में ही सफलता के साथ
बाँध लेते हैं उसी प्रकार रहीम
भी महर्षि जैसे स्वसिन्हाओं से
अपने दोहों के सहारे लवकर लेते
हैं।

रहीम ने अपने दोहों में अपने
जीवन में जीते अनुभवों को
अमिव्यक्त किया है। वे अपने
जीवन में अनेक कष्टों को झेल
चुके थे। विपत्तियों से संबंधित
निम्न दोहों द्रष्टव्य हैं।

“रहिमन्न असमय के पूरे
दिव अनदित हो जाय।
बधिक बचें मुग वाण सो

सधैरे देल बराय मुक्त
अच्छति, पुरे समय में जो
अपने होते हैं वे परायें बन
जाते हैं। रहीम ने अपने दरबार
से कभी किसी को खाली हाथ
नही लौटाया। उनका माननीय
कि मांगने वाला व्यक्ति मृतक के
समान है छंद उसे खाली हाथ
लौटाने वाला व्यक्ति भी मृतक
ही है।